अध्याय : 5

उपसंहार

5·1 लघु-शोध-प्रबंध का सारतत्व

5·2 लघु-शोध-प्रबंध की मुख्य उपलब्धियाँ

अध्याय : 5

उ प सं हा र

1· लघु-शोध-प्रबंध का सारतत्व

2· लघु-शोध-प्रबंध की मुख्य उपलब्धियाँ

1· लघु-शोध-प्रबंध का सारतत्व

ग़ज़ल काव्य की एक बेहद खूबसुरत और ताकतवर विधा है। इस विधा के महान ग़ज़लकार दुष्यन्तकुमार रहे हैं। उनके साहितय का मूल स्वर है यथार्थ और मानवता। उन्होंने अपने जीवन में जो भोगा, अनुभवा उसीको साहित्य में व्यक्त किया है। वे जितने शरारती थे उतने ही गंभीर थे। उनका व्यक्तित्व, बहुमुखी, प्रतिभा संपन्न था। वे सच्चे अर्थों में एक इन्सान थे। साहित्य जगत् में उनका कार्य महान है। जिसे लोग भूल नहीं पाते। उन्हें हिन्दी साहित्य में आधुनिक युगबोध के सफल, सृष्टा, तरुण कवि भी कहा है। उन्होंने ग़ज़लों के अलावा नाटक, एकांकी, समीक्षा आदि में भी अपना नाम रोशन किया है। एक साधारण परिवार में जन्मे हुए दुष्यन्तकुमार हिन्दी साहित्य में एक मशाल की तरह रहे, जिसका आलोक आज भी फैल रहा है।

ग़ज़ल शब्द के अनेक अर्थ बताये गये हैं, जिसमें औरतों से प्यार भरी बातचीत भी माना है। दूसरे शब्दों में मेहबूबा से इश्क की बाते करने का माध्यम भी कहा है। ग़ज़ल में शेर, मतला, मकता, रदीफ़ तथा काफ़िया का होना अनिवार्य है। दुष्यन्तकुमार ने आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करने का माध्यम ग़ज़ल माना है। 13 वीं शताब्दि में हिन्दी ग़ज़लों का उद्‌भव हुआ है। अमीर खुसरो को हिन्दी के पहले ग़ज़लकार माना है। भारतेन्दु के जमाने में ग़ज़ल में मौलिकता बढ़ने लगी। हिन्दी ग़ज़ल का ऐतिहासिक विकास महत्वपूर्ण है, जिसमें महत्वपूर्ण युग दिखायी देते हैं

उनमें प्रेमप्रधान युग, शिल्प का युग, रोमानी ग़ज़ल का युग, सामाजिक यथार्थ का युग महत्वपूर्ण माना जाता है। विभिन्न अखबारों ने भी समय-समय पर हिन्दी ग़ज़लों के विकास में सहयोग दिया है। इनमें महत्वपूर्ण है नवभारत टाइम्स, भास्कर, जनसत्ता आदि।

हिन्दी ग़ज़ल के विकास में दुष्यन्तकुमार का विशेष योगदान रहा है। "साये में धूप" उनका महत्वपूर्ण ग़ज़ल संग्रह है। ये ग़ज़ल संग्रह उनकी सोच एवं विचारों का आइना है। इसमें आम आदमी की पीड़ा, विवशता, सामाजिक स्थिति, भ्रष्ट व्यवस्था, तानाशाही प्रवृत्ति का विरोध किया है। उन्होंने ज्यादातर ग़ज़लों में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। अपनी ग़ज़लों के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ाया है। शोषण करने वाले तथा भ्रष्ट राजनेताओं में करारा व्यंग्य किया है। उनकी ग़ज़लों में देशप्रेम तथा वेदना का चित्रण भी दिखायी देता है।

हिन्दी ग़ज़लों के शिल्पविधान की आत्मा भारतीय है। दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लों में फारसी और उर्दू तथा हिन्दी शब्दों की मिलाप शैली का प्रयोग दिखायी देता है। उनकी ग़ज़लों की भाषा आम आदमी की रही है। साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग इन्होंने किया है। हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में स्व॰दुष्यन्तकुमार युगबोध के सफल ग़ज़लकार रहे हैं। वे एक ऐसा स्थान रिक्त कर गये हैं जिसे आने वाले दिन समय की धूल से धूमिल कर सकते हैं भर नहीं सकते।

2॰ <u>लघु-शोध-प्रबंध की मुख्य उपलब्धियाँ</u>

ग़ज़ल उर्दू-फारसी की लोकप्रिय विधा रही है। पुराने जमाने में इसने वासनात्मकता को अपनाया था। आज इसका रुक बदल गया है आज यह विधा समाज के नींव पर खड़ी है। आज इसमें केवल सामाजिकता दिखायी देती है। मुख्यतः हिन्दी की ग़ज़ले मनुष्य की पीड़ा का विषय बनी है। हमने आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त किया है। अमीर खुसरो से लेकर दुष्यन्तकुमार तक ग़ज़ल की महक चारों ओर फैली रही और आज भी ताकतवर ग़ज़लकारों के साथ वह महक रही है।

मूलतः ग़ज़ल काव्य की एक बेहद खुबसूरत और ताकतवर विधा है। ग़ज़ल को एक वृत्त, कविता प्रकार या गायन प्रकार भी माना जाता है। इस्लामी संस्कृति से भारतीय संगीत को मिली हुई देन के रूप में भी उसे जाना जाता है। इसके आधार पर मैंने कुछ उपलब्धियाँ निकाली हैं -

1. स्व.दुष्यन्तकुमार त्यागी हिन्दी के एक सफल कवि एवं ग़ज़लकार हैं। वे एक सफल उपन्यासकार तथा नाटककार भी हैं। निष्कर्ष के रूप में हम कहेंगे कि वह आज़ादी के बाद के प्रमुख साहित्यकारों में से एक हैं।

2. दुष्यन्तकुमारजी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा संपन्न था। उनमें साहित्य निर्माण की विविध शैलियों की क्षमता थी।

3. दुष्यन्तकुमार ने अपनी ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करके हिन्दी ग़ज़ल को एक नयी दिशा प्रदान की।

4. दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लें पढ़कर ऐसा लगता है कि उनकी ग़ज़लें उसके कवि कर्म को पूर्णत्व तक पहुँचाने का प्रयास है।

5. दुष्यन्तकुमार की ग़ज़ले देखकर ऐसा लगता है कि उनकी ग़ज़ले जनसाधारण के विचारों का और भावों का एक विश्वासार्ह साधन है।

6. दुष्यन्तकुमार ने अपनी ग़ज़लों के जरिए समसामयिक दुःस्थिति को बदल देने का आव्हान किया है।

7. दुष्यन्तकुमार की ग़ज़ल का एक-एक शेर हमें मशाल की तरह दिखायी देता है जो आलोक फैलाकर सही रास्ते पर आगे बढ़ने में सहायक हो सकता है।

8. दरअसल साहित्य और समाज का तो चोली-दामन का साथ है। दुष्यन्तकुमार ने अपनी ग़ज़लों में तत्कालीन सरकार के गलत रवैये पर तीखे प्रहार किये हैं। तथा सामाजिक बुराइयों का पर्दाफाश किया है।

9. दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लें शिल्प की दृष्टि से बड़ी सशक्त बन पड़ी है उनकी ग़ज़लों की भाषा आम आदमी की भाषा है।

10. हिन्दी ग़ज़ल का साहित्य देखकर लगता है कि दुष्यन्तकुमार ने इस विधा में चार चाँद लगाये हैं। उन्हें हिन्दी का महान ग़ज़लकार कहना गलत नहीं होगा। वे एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न ग़ज़लकार रहे हैं।